Kishna Nand M.A. ~~III~~ Sem 4 ①

एक दूसरे गेम में रोगी को जोर-जोर से बोल
उस टिप्पणी या वाक्य को दोहराने के लिए कहा
जाता है जिसे चिकित्सक महत्वपूर्ण समझकर
कहता है। इसी तरह के अन्य गेम जैसे भूमिका
निर्वाह गेम भी रोगी को करने के लिए कहा जाता
है जिसमें रोगी को भिन्न-भिन्न तरह की भूमिका
करनी पड़ती है।

गेस्टाल्ट चिकित्सा प्रविधि में अग्रांकित
सम्प्रत्ययों को भी महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि
इन सबसे रोगी की वर्तमान अवस्थाओं को समझने
में मदद मिलती है—

(i) टापडॉग तथा अण्डरडॉग :— गेस्टाल्ट चिकित्सा
में टापडॉग से तात्पर्य करीब-करीब वही है जो
फ्रायड के सिद्धान्त में अपराह (~~id प्रकार से~~
~~उसके ... कहते~~) (super ego) का है तथा
अण्डरडॉग से तात्पर्य वही है जो फ्रायड के सिद्धान्त
में उपाह (id) का है। जब व्यक्ति के इन दोनों
पहलुओं में संघर्ष होता है तो रोगी को वार्तालाप
के माध्यम से इन दोनों की भूमिका करनी पड़ती
है ताकि आत्मन के इन दोनों संघर्षात्मक पहलुओं
को आपस में समन्वित कर सके।

(ii) स्वप्न :— चिकित्सक द्वारा स्वप्न का भी
उपयोग किया जाता है। परंतु मनोविश्लेषकों से
अलग प्रकार से। पर्ल्स का मानना है कि स्वप्न
का प्रत्येक तत्व चाहे उसका स्वरूप मानव से
संबंधित हो या किसी अन्य वस्तु से संबंधित हो
के द्वारा रोगी के व्यक्तित्व के एक असंबद्ध अंश
का प्रतिनिधित्व होता है। चिकित्सा सत्र में रोगी
को अपने स्वप्न के बारे में वर्तमान काल का
उपयोग करते हुए बतलाना होता है और इस
तरह से उसे स्वप्न के विषय के अनुरूप भूमिका
करनी होती है। गेस्टाल्ट चिकित्सकों का मत है
कि स्वप्न के विभिन्न वस्तुओं या व्यक्तियों की
भूमिका का निर्वाह करने में आत्मन के असंबद्ध
अंशों को रोगी समझता है और ऐसा समझ
विकसित कर लेने पर उसे पुन: समन्वित
करने में सफलता मिलती है।

(iii) ~~ए~~ रक्षाएं :— गेस्टाल्ट चिकित्सा का उद्देश्य
वर्तमान बहुत ही ...

रोगी द्वारा खेले गए गेम्स के पीछे छिपी इच्छाएँ का पता लगाना है। पर्ल्स का कहना है कि समायुक्ति कुति व्यवहार में ऐसी इच्छाओं के कई तहें होती हैं। ऐसे व्यवहार के पहलु तह में रोगी स्वयं अपने आप का सामना करने से हिचकता है। साथ-ही-साथ तरह-तरह के चिन्ता, दुश्चिंता एवं आशंकाओं से अपने आप को घिरा पाते हैं। गेस्टाल्ट चिकित्सा प्रविधि में इस रक्षात्मक तह को हटाकर रोगी को वास्तविकता से अवगत कराना प्रमुख कार्य होता है। इस प्रकार की नयी जानकारी प्राप्त होने से पीड़ितों में सम्पूर्णता और उत्साह का संचार होने लगता है।

(ब) अशाब्दिक व्यवहार का उपयोग :— गेस्टाल्ट चिकित्सा विधि से पीड़ित के अशाब्दिक व्यवहारों का उपयोग किया जाता है। इससे चिकित्सक को कुछ अन्य महत्वपूर्ण सूचनाएँ एकत्र करने में सहूलियत होती है। इस क्रम में पीड़ित क्या कहता है और क्या करता है पर सूक्ष्मता से ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अशाब्दिक व्यवहारों के निरीक्षण से बहुत सी महत्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती हैं जो रोगी द्वारा बोलकर दी गई सूचनाओं के विपरीत होती हैं और ये सूचनाएँ चिकित्सा के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। इससे रोगी द्वारा उपयोग किया गया रक्षात्मक प्रतिक्रियाओं का वास्तविक मतलब समझने में आसानी होती है।

(स) नैतिक प्रेरणा (Moral principle) — नैरेन्जो (1970) द्वारा गेस्टाल्ट चिकित्सा के कुछ प्रमुख बिन्दुओं को नैतिक प्रेरणा (Moral principle) कहा गया है जो निम्नांकित हैं —

(अ) वर्तमान में रहना — रोगी को सदैव वर्तमान के बारे में सोचना चाहिए न कि भूत या भविष्य के बारे में।

(ब) उपस्थित वस्तुओं के बारे में सोचना चाहिए न कि अनुपस्थित वस्तुओं के बारे में।

(स) कल्पना करना बंद करना चाहिए और वास्तविकता का अनुभव करना चाहिए।

(द) रोगी को अनावश्यक चिंतन बंद करना चाहिए।

Krishna Nand M.A III sem (4)

कुछ नैदानिक आलोचकों का मत है कि इस विधि से प्राप्त लाभ स्थायी नहीं होता है।

(iii) फ्रेयर्स (1984) के मतानुसार इस प्रविधि की अलोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि इनके समर्थकों द्वारा ~~इसके समर्थकों द्वारा~~ इसपर शोध के विचार को मानवता विरोधी बतलाकर विरोध किया जाता है।

कोरचिन (1986) की टिप्पणी भी इस प्रविधि के प्रतिकूल है। इन्होंने इसके संबंध में कहा है कि —" अबतक गेस्टाल्ट चिकित्सा का कोई क्रमबद्ध लेखा-जोखा नहीं तैयार किया गया है। इसकी प्रभावशीलता या इसके विशेष प्रविधि के मूल्य से संबंधित कोई गुणात्मक शोध सबूत नहीं है।

(iv) गेस्टाल्ट चिकित्सा वास्तव में गेस्टाल्टवाद, मनोविश्लेषणवाद और अस्तित्ववाद का सम्मिलित रूप है। इस कारण इस चिकित्सा प्रविधि का स्वरूप स्पष्ट नहीं है।

उपरोक्त ~~[illegible]~~ तथ्यों के आधार पर मूल्यांकन के पश्चात यह कहा जा सकता है कि यह प्रविधि मानवतावादी नैदानिक चिकित्सकों के बीच आज भी लोकप्रिय है।

The end